IJAER/March-April 2017/Volume-5/Issue-5/Article No-1/ 1-5 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

स्नातक स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों तथा कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

Poonam Godara
Research Scholar
Tantia University
Sri Ganganagar (Rajasthan)

Dr. Tara Singh Gill
Supervisor
Tantia University
Sri Ganganagar (Rajasthan)

सार– यह विकास का सामान्य नियम है कि वह सामान्य से जटिल की ओर गमन करता है यही नियम सामाजिक विकास पर भी लागू होता है। आधुनिक समाज, प्राचीन समय के कबायली समाज से कहीं अधिक जटिल एवं क्लिष्ट है चाहे वह सामाजिक स्तर हो, आर्थिक स्तर हो या फिर राजनैतिक। वर्तमान समय का सामाजिक परिवेश किसी भी प्रकार से मनुष्य को प्रभावित किये बिना नहीं रह सकता जिसका सीधा असर मनुष्य के सामाजिक सम्बन्धों के निर्वहन पर पड़ता है चाहे वे अर्न्तव्यैक्तिक हो या फिर अर्न्तसामाजिक।

प्रस्तावना

बरसों पहले यूनानी दार्शनिक अरस्तु द्वारा कहा गया यह कथन आज भी कितना प्रासंगिक है। आदि काल से लेकर आज तक यदि हम मानव की विकास यात्रा पर दृष्टिपात करते हैं तो कहीं पर भी उसे अकेला नहीं पाते पाषाण युग के कबायली खानाबदोष जीवन से वर्तमान समय के सभ्य आधुनिक जीवन तक का सफर एक प्रकार से मनुष्य की सामुदायिकता का ही विकास है उसके सामाजिक जीवन का क्रमबद्ध विकास है। हर चरण में मनुष्य ने अपनी सामुदायिकता एवं सामाजिक भावना को उत्तरालेख उन्नत बनाया है।

निश्चित रूप से यह सत्य है कि मनुष्य अकेला जन्म लेता है लेकिन इस तथ्य से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि आखिर जन्म इस समाज के ही बीच होता है। निरीह मानव प्राणी जब आँख खोलता है तो स्वयं को इस समाज के बीच पाता है, अधिकांश महत्वपूर्ण रिश्ते एवं सम्बन्ध उसे विरासत में प्राप्त होते हैं। इन्हीं के बीच वह अपने अस्तित्व को तलाशता है, अपनी एक सापेक्ष पहचान बनाता है। अगर कभी वह स्वयं को इन सब से अलग करने की लेशमात्र भी कोशिश करता है तो उसका वजूद ही खतरे में पड़ जाता है। इसी सन्दर्भ में अरस्तू ने कहा है – **''यदि कोई व्यक्ति बिना समाज के रह सकता है तो, या तो वह देवता है या फिर दानव''।**

समय–समय पर विभिन्न दार्शनिकों, समाजशास्त्रियों एवं बुद्धिजीवियों ने मनुष्य की समाजिकता एवं समाज को सशक्त बनाने की पुरजोर वकालत की। प्राचीन समय के निरंकुश राजतन्त्र एवं अधिनायकवाद से लेकर आज की लोकतान्त्रिक पद्धति इसी प्रयास का सफल परिणाम है। हेगेल समाज के लिए मनुष्य को अपना सर्वस्व न्यौछावर करने की बात करता है, तो रूसो व्यक्ति को अपनी व्यैक्तिकता सामूहिकता में तलाशने की बात करता है। वर्तमान समय में लोकतन्त्रात्मक एवं विकेन्द्रीकरण की प्रवृत्ति ने मनुष्य की सामुदायिक भावना को निर्विवाद रूप से सिद्ध किया है। आज हम जिस भूमण्डलीकरण, संस्कृतिकरण एवं ग्लोबल विलेज की बात करते हैं वे सभी कहीं न कहीं मनुष्य की सामुदायिक भावना से गहरे से जुड़े हैं या यों कहें कि उसकी सामाजिकता की ही मूर्त संकल्पना है। इसी महत्वपूर्ण मानवीय कारक के कारण आज राष्ट्रीयता की सीमायें टूट रहीं हैं और हम अन्तर्राष्ट्रीयता की दिशा में प्रभाव पूर्ण तरीके से कदम बढ़ा रहे हैं।

मनुष्य के पास उसका विवेक ही ऐसी शक्ति है जो उसे सृष्टि के अन्य जीवों से अलग करती है। इसी के बल पर वह सही गलत की पहचान कर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करता है। बुद्धि के बल पर ही मनुष्य तार्किकता एवं निर्णय निर्माण की क्षमता प्राप्त करता है जो उसे वांछनीय एवं अवांछनीय का ज्ञान कराते हैं। जिसकी मनुष्य को इस समाज से घिरा होने के कारण हर समय जरूरत रहती है। उसे हर समय कहीं ना कहीं, किसी ना किसी सम्बन्ध का निर्वहन करना होता है। इसी कारण प्रसिद्ध समाज शास्त्री मेकाइवर ने कहा है कि– **''समाज सामाजिक सम्बन्धों का जाल है।''**

इस प्रकार समाज की सामाजिकता की माँग को पूरा करने हेतु मनुष्य की सामाजिक बुद्धि का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य हो जाता है।

समस्या का उद्भव

वर्तमान समय में बढ़ती कमरतोड प्रतिस्पर्धा ने प्रत्येक स्तर पर बड़े पैमाने पर व्यापारीकरण को बढ़ावा दिया है। जिसके फलस्वरूप मानव जीवन का हर पहलू लाभ–हानि की कसौटी पर कसा जाता है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में एक सौदेबाजी हमेशा चलती रहती है। विकास की इस यात्रा में हम आज विज्ञान एवं भौतिकवाद पर कुछ ज्यादा ही निर्भर हो गये हैं जिस कारण मनुष्य के हर कार्य को उपयोगिता की कसौटी पर कसना जरूरी हो गया है। वर्तमान समय की सूचना क्रांति ने बेहतर सम्प्रेषण क्षमता को अधिक विस्तृत किया है। प्रबन्धन, वाणिज्य, राजनीति, सेवा, आदि विशेषीकृत क्षेत्रों ने मनुष्य की सामाजिक निपुणता एवं कुशलता को बड़े पैमाने पर चुनौती दी है। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुए यह बेहद जरूरी है कि व्यक्ति की सामाजिक बुद्धि के पर्याप्त विकास एवं सामाजिक कौशलों में दक्ष बनाने हेतु विद्यार्थियों में सामाजिक बुद्धि का व्यापक अध्ययन किया जाये जिससे कि विद्यार्थी आगे चलकर विभिन्न व्यवसायों एवं सेवाओं में स्वयं को ठीक ढंग से समायोजित कर सके तथा सामाजिक दायित्वों एवं सम्बन्धों का कुशलतापूर्वक निर्वहन कर सके।

विद्यार्थी

व्यापक अर्थ में विद्यार्थी से तात्पर्य किसी भी प्रकार से किये गये विद्याध्ययन अथवा ज्ञानार्जन से है जिसमें उम्र, लिंग अथवा समय की कोई सीमा नहीं होती। इस दृष्टि से प्राणी जीवन पर्यन्त एक विद्यार्थी बना रहता है। लेकिन प्रस्तुत पेपर में प्रयुक्त विद्यार्थी शब्द से तात्पर्य बालक एवं बालिकाओं के लिए सामान्यतः उभयनिष्ठ एवं संयुक्त सम्बोधन की ओर इशारा करता है। जो एक निश्चित समय तक नियन्त्रित परिवेश अर्थात् विद्यालय में रहकर निर्धारित पाठ्यक्रम के तहत औपचारिक शिक्षा ग्रहण करने के कारण छात्र एवं छात्राओं की श्रेणी में आते हैं। यहाँ विद्यार्थी शब्द हेतु छात्र एवं छात्राओं की समान रूप से मौजूदगी अनिवार्य रूप से सुनिश्चित है। इसमें किसी भी प्रकार का कोई लैंगिक विभेद नहीं है।

सामाजिक बुद्धि

सामाजिक बुद्धि से अभिप्राय व्यक्तियों को समझने तथा उनके साथ व्यवहार करने की योग्यता से है। दैनिक जीवन की विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में सामंजस्य बनाने में सामाजिक बुद्धि महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। वास्तव में यह अन्य व्यक्तियों के साथ परस्पर अन्तःक्रिया करने की योग्यता की द्योतक है। सामाजिक बुद्धि से युक्त व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के साथ शीघ्रता व सुगमता से समायोजन कर लेता है जबकि सामाजिक बुद्धि के भाव में व्यक्ति को सामाजिक संबंध बनाने तथा उन्हें बनाए रखने में कठिनाई होती है। सामाजिक बुद्धि व्यक्ति में सामाजिक कौशल विकसित करके उन्हें व्यवहार कुशल बनाती है। सामाजिक बुद्धि से युक्त व्यक्ति प्रायः अन्य व्यक्तियों से अच्छे सामाजिक सम्बन्ध बनाते हैं तथा समाज में सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं। ऐसे व्यक्ति अच्छे नेता बनते हैं।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

सामाजिक बुद्धि का प्रत्यय विश्व के लिए एक उभरता हुआ प्रत्यय है। जबकि भारत में यह अभी नवजात अवस्था में है। शोधकर्ता ने मनोविज्ञान की अनेक पुस्तकों, विश्व शब्दकोश तथा राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय जनरलों तथा इन्टरनेट का अध्ययन किया। इस क्षेत्र में हुए लगभग सभी शोध सामाजिक बुद्धि की महत्ता को इंगित करते हैं।

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, जब वे बुद्धि के बारे में लिखते अथवा सोचते हैं तो वे मूर्त बुद्धि के बारे में लिखते अथवा सोचते हैं। किन्तु कुछ ने अपने अलग विचार प्रस्तुत किये। उन्होंने विचार करने के पश्चात बुद्धि को व्यक्तिक योग्यताओं के समूह को माना।

1940 में डेविड वैश्चलर ने बताया कि जीवन में मूर्त तथा अमूर्त दोनों प्रकार की बुद्धियों का बराबर कार्य होता है। अमूर्त बुद्धि से उसका तात्पर्य व्यक्ति तथा सामाजिक कारकों से था।

1943 में डेविड वैश्चलर ने बताया कि अमूर्त योग्यतायें किसी व्यक्ति के जीवन में सफल होने की मूलभूत आवश्यकतायें हैं। उन्होंने यह भी बताया कि–

"The main question is whether non intellective, that is affective and cognative abilities are advisable as a factor of general intelligence (my contention) has been that such factor are not only admissible but necessary. I have tried to show that in addition to intellective there are also define non-intellective factors that determine intelligent behaviour. If the foregoing observation are correct, it follows that we cannot expect to measure total intelligence without our tests also include some measure of the non-intellective factors".
(Wechster 1943, Pg. 103)

वैश्चलर अकेले शोधार्थी नहीं थे जिन्होंने देखा कि अमूर्त योग्यतायें किसी व्यक्ति के जीवन में सफल एवं स्वीकृत होने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

रॉबर्ट थार्नडाइक दूसरे व्यक्ति थे जिन्होंने सामाजिक बुद्धि के बारे में 30 के युग में लिखा। दुर्भाग्यपूर्ण अग्रदूतों के कार्य को 1983 तक भुला दिया गया एवं अदृश्य कर दिया गया। जब हॉबर्ट गार्डनर ने "Multiple Intelligence" के बारे में लिखना शुरू किया। गार्डनर ने बताया कि Interpersonal और Intrapersonal बुद्धि इतनी महत्वपूर्ण है जितनी सम्बन्धित परीक्षण और I. Q. के द्वारा मापी गई प्रकार की बुद्धि।

1940 में, Hemphill के दिशा निर्देशन में "Ohio" राज्य नेतृत्व अध्ययन में सुझाव दिया गया।

"Consideration is an important aspect of effective leadership. More specifically this research suggested that leaders who are able in the establishment of trust respect and a certain warmth and rapport"

The Psychometric View

The psychometric view of social intelligence has its origin **E.L. Thorndike's (1920)** division of intelligence into three facts pertaining of the ability to understand and manage ideas (abstract intelligence) concrete objects (mechanical intelligence) and people (social intelligence). In his classic formulation "By social intelligence means the ability to understand and manage men and women boys and girls to act wisely in human relation". Similarly, **Moss and Hunt (1927)** defined social intelligence as the "ability to get along with others".

प्रदत्तों का संकलन

प्रदत्तों का अर्थ है– आँकड़े। वैज्ञानिक, सामाजिक एवं शैक्षिक अनुसंधानों में प्रदत्तों की आवश्यकता पड़ती है। ये प्रदत्त प्रमाणिक अनुसंधान उपकरण या स्वयं निर्मित उपकरणों द्वारा प्राप्त किये जाते हैं इस प्रकार वस्तुनिष्ठ आँकड़े प्राप्त हो जाते हैं।

अधिकांश प्रदत्त प्राप्तांकों के रूप में एकत्र किये जाते हैं। प्रदत्त वह वस्तु है जिसकी सहायता से हम समझते हैं कि शोध के निष्कर्ष वैद्य एवं विश्सनीय हैं।

तालिका 1
स्नातक स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि के सम्बन्ध में मध्यमान अंक

क्र. सं.	ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी	ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की संख्या– N	मध्यमान M	मानक विचलन SD	मानक त्रुटि σ_d	क्रान्तिक अनुपात CR	सार्थकता परिणाम (0.05)
1.	ग्रामीण	50	108.50	5.99	1.2	0.63	असार्थक
2.	शहरी	50	107.75	6.04			

तालिका 1 से स्पष्ट है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों का सामाजिक बुद्धि में क्रान्तिक अनुपात का मान 0.63 प्राप्त होता है। जो विश्वास स्तर .05 पर प्राप्त सार्थकता मूल्य 1.96 व विश्वास स्तर .01 पर प्राप्त सार्थकता मूल्य 2.58 से कम है।

स्पष्टतः यहाँ क्रान्तिक अनुपात .63 को सार्थक अन्तर नहीं माना जा सकता। इस प्रकार शोध परिकल्पना– ''स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'' स्वीकृत होती है।

स्नातक स्तर पर कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का अध्ययन।

''स्नातक स्तर पर कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

तालिका 2

स्नातक स्तर पर कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि के सम्बन्ध में मध्यमान अंक

क्र. सं.	संकाय	विद्यार्थियों की संख्या– N	मध्यमान M	मानक विचलन SD	मानक त्रुटि σ_d	क्रान्तिक अनुपात CR	सार्थकता परिणाम (0.05)
1.	कला	50	105.77	7.18	2.25	1.03	असार्थक
2.	विज्ञान	50	107.45	14.18			

तालिका 2 से स्पष्ट है कि कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों का सामाजिक बुद्धि में क्रान्तिक अनुपात 1.03 प्राप्त होता है। जो विश्वास स्तर .05 पर प्राप्त सार्थकता मूल्य 1.96 व विश्वास स्तर .01 पर प्राप्त सार्थकता मूल्य 2.58 से कम है। जिस कारण यहाँ क्रान्तिक अनुपात 1.03 को सार्थक नहीं माना जा सकता।

इस प्रकार ''स्नातक स्तर पर कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'' स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष

अक्सर यह माना जाता है कि ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि अधिक होती है। लेकिन यह अध्ययन इस धारणा को सिरे से खारिज करता है और पूर्ण विश्वास के साथ यह तथ्य हमारे सामने रखता है कि– ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में कोई अन्तर नहीं होता, दोनों ही समान रूप से सामाजिक समायोजन एवं सामाजिक कुशलता के प्रति संवेदनशील होते हैं। यह उनके सामाजिक बुद्धि के एक समान संज्ञानात्मक स्तर पर होने के ही परिणाम स्वरूप हैं।

एक आम धारणा अक्सर यह भी रही है कि विज्ञान विषय के विद्यार्थी सामाजिक विषयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक सामाजिक होते हैं। प्रस्तुत अध्ययन इस भ्रमपूर्ण धारणा को भी मजबूती के साथ अस्वीकृत करता है और यह तथ्य प्रकाश में लाता है कि विज्ञान एवं कला संकाय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता। दोनों ही समान रूप से सामाजिक बुद्धि के एक समान बौद्धिक स्तर पर होते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

सिंह, ए०के० : शिक्षा मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली

राय, पी०एन० शिक्षा अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा

शर्मा, आर०ए० : शिक्षा अनुसंधान, आर० लाल बुक डिपो, मेरठ

भटनागर, आर०पी० : शिक्षा अनुसंधान

कपिल, एच०के० : सांख्यिकीय के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2

गुप्ता, एस०पी० : आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद

गुप्ता, एस०पी० : उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद

पाठक, पी०डी० : मेसरमेन्ट एण्ड फिजोलोजी, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

लाल, आर०बी० : मनोविज्ञान एवं मापन

भार्गव, एम० : आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन, शैक्षिक प्रकाश, आगरा

गैरिट, एच०ई० : अनुसन्धान विधियाँ, हरप्रसाद भार्गव, आगरा

Mind Habits : (http://www.mindhabits.com/english/products/how_it_work.php). Social intelligence training website

Social Intelligence : (http://socrates.berkeley.edu/~kihlstrm/social_intelligence.htm), John Kihlstrom and Nancy Cantor, in R.J. Sternberg (Ed.), Handbook of intelligence, 2nd ed. (pp. 359-379), Cambridge, U.K. Cambridge University Press.

Weschler, D. (1975) : Intelligence defined and undefined: A relativistic appraisal American Psychologist, 30, 135-136.